गुमला प्रखण्ड में बाल-विवाह की समस्या का अध्ययन

रंजना सिंह

गुमला प्रखंड में बाल-विवाह की समस्या का अध्ययन

संपादक
रंजना सिंह
गुमला, झारखंड, भारत

Publisher :
Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

Year : **2023**
Edition - **01**

रंजना सिंह
गुमला, झारखंड, भारत

ISBN : **978-93-92568-41-1**

Copyright© All Rights Reserved
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original Editor.

Price : For Free Distribution.

Publisher & Printed by :
Aditi Publication,
Opp. New Panchajanya vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

गुमला प्रखण्ड में बाल–विवाह की समस्या का अध्ययन

प्रस्तुतकर्त्ता का नाम
संकाय सदस्य
रंजना सिंह
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण
संस्थान (डायट), गुमला।

।। वाणी अर्चना ।।

जय-जय हे भगवति सुर भारति,

तव चरणौ प्रणमामः प्रणमामः प्रणमामः।

''हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।''

—स्वामी विवेकानन्द

''शीलं परम् भूषणम्''

—सरोजिनी नायडू

घोषणा-पत्र

मैं, रंजना सिंह, यह घोषणा करती हूँ कि यह लघु शोध प्रबंध जिसका शीर्षक है– ''गुमला प्रखंड में बाल-विवाह की समस्या का अध्ययन'' जिसे मैं झारखण्ड शिक्षा अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद (जे. सी. ई. आ. र. टी.) मेंप्रस्तुत कर रही हूँ। यह एस. आर. जी. डॉ. राहुल कुमार के पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में हमारे द्वारा निर्मित है और किसी अन्य के शोध प्रबंध की नकल नहीं है। यह हमारा मौलिक लघु शोध प्रबंध है।

रंजना सिंह
संकाय सदस्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण
संस्थान, (डायट), गुमला।

आभार-प्रदर्शन

यह लघु शोध प्रबंध डॉ. राहुल कुमार एस. आर. जी., जे. सी. ई. आर. टी., राँची के कुशल निर्देशन में लिखा गया है। इसके समस्त विवेचनांश एवं विचार खण्ड में डायट, गुमला के संकाय सदस्यों के संकेतों के वृहदाकार हैं। डायट गुमला के प्राचार्य श्री रकीब अंसारी सर ने विशेष कर प्रोत्साहित किया डायट, गुमला की प्रभारी प्राचार्य ने बड़े प्यार, सहृदयता तथा तन्मयता से इस कार्य को प्रोत्साहित किया। उनके प्रति मैं आभारी हूँ। इसके अलावा डायट, गुमला के संकाय सदस्य श्री सिकन्दर नाथ प्रजापति सर का भी अपेक्षित सहयोग मिला तथा अन्य संकाय सदस्य श्री प्रेमचन्द उराँव सर तथा श्री विकास कुमार तथा श्री कुमार सुन्दरम भारद्वाज सर का भी सहयोग मिला।

इसके अतिरिक्त उ0 म0 वि0, नवाडीह, गुमला, उ0 म0 वि0, खोरा की प्राचार्या श्रीमति ज्योजिबाला मिंज का विशेष योगदान रहा तथा विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भी सहयोग किया। जिलास्कूल, गुमला तथा मॉडल स्कूल, गुमला के प्राचार्य में विशेष सहयोग प्रदान किया। इसके अलावा विद्यालयों के विद्यार्थियों ने सहयोग किया। कस्तूरबा बालिका विद्यालय, गुमला की प्राचार्या श्रीमति रोहिणी मैडम ने भी सहयोग किया। शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावकों ने भी भरपूर सहयोग दिया।

उन सब विद्वानों के प्रतिमैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिनकीरचनाओं से मैं ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ली है। इसके अतिरिक्त अन्य विद्वानों, मित्रों तथा गुरूजनों, का सहयोग रहा। इसके अतिरिक्त डायट, गुमला के कर्मचारियों तथा आदेशपाल सभी का सहयोगमिला।

इसके अतिरिक्त मेरे परिवार के सभीसदस्यों विशेष कर मेरे सुपुत्र श्री रुद्राक्ष सिंह का तकनी की सहयोग प्राप्त हुआ जिसके बिना यह रिपोर्ट लिखना मुश्किल था। मेरे पति श्री संजय कुमार ने भी आँकड़ों को इकट्ठा करने में मेरी मदद की। मेरी पुत्री संजना सिंह ने भी मुझे नैतिक व मानसिक रूप से मुझे सहयोग किया।

रंजना सिंह
संकाय सदस्य, डायट, गुमला

आमुख

शिक्षा शास्त्र का एक अनुशासन के रूप में विकास हुआ है, परन्तु जिसने शोध विधि विज्ञान को अधिक विकसित कर लिया है। शोध के अन्तर्गत वैज्ञानिक विधियों एवं प्रविधियों को समस्याओं के समाधान हेतु प्रयुक्त किया जाता है। शोध की वैज्ञानिक विधियाँ शिक्षकों तथा शिक्षा-शास्त्रियों के लिए अधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षा अनुशासन का मूल अध्ययन क्षेत्र कक्षा शिक्षण है। इसी तथ्य को कोठारी आयोग ने भी महत्त्व दिया है– **"भारत के भाग्य का निर्माण विद्यालय की कक्षाओं में हो रहा है।"** आज विद्यालयों की कक्षा के अंतर्गत अधिक विविधता है तथा नये-नये पाठ्यक्रमों को सम्मिलित किया जा रहा है। समाज में परिवर्तन भी बड़ी तीव्रता से हो रहा है। सामाजिक बुराईयों में, सामाजिक जागरूकता के कारण, कमी भी आयी है। आज के बालकों में नशापान, अवसाद की समस्या तथा आक्रामक व्यवहार की समस्याएँ तीव्रगति से बढ़ रही हैं।

इस प्रकार यह लघु शोध प्रबंध शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के सामाजिक जागरूकता के स्तर को समझने में सहायक होगा। यह आगे के शोध-कार्य के लिए मददगार भी साबित होगा।

रंजना सिंह
संकाय सदस्य,
डायट, गुमला

शोध-सार

गुमला प्रखण्ड में बाल-विवाह की समस्या के अध्ययन के लिए हमने सर्व प्रथम सामाजिक जागरूकता के पाँच स्तरोंपर आधारित 62 प्रश्नों की प्रश्नावली लिया तथा अभिभावकों की विवाह के प्रति अभिवृत्ति जानने के लिए भी पाँच स्तरों की एक प्रश्नावली का प्रयोग किया जिसमें 38 प्रश्न थे।

समाजिक जागरूकता वाली प्रश्नावली में 39 प्रश्न सकारात्मक थे तथा 23 प्रश्न नकारात्मक थे जिनका उत्तर विद्यार्थियों से हाँ, नहीं व अनिश्चित के रूप में लिया गया जब कि विवाह की अभिवृत्ति वाली प्रश्नावली में 38 प्रश्न थे जिसमें 33 प्रश्न सकारात्मक तथा 3 प्रश्न नकारात्मक श्रेणी के थे जिन का उत्तर अभिभावकों से हाँ, नहीं व अनिश्चित के रूप में लिया गया। प्रत्येक सकारात्मक प्रश्न में हाँ के लिए 1 अंक, नहीं के लिए 3 अंक तथा अनिश्चित के लिए 2 अंक दिया गया जब कि प्रत्येक नकारात्मक प्रश्न में हाँ के लिए 3 अंकित था नहीं के लिए 1 अंक व अनिश्चित के लिए 2 अंक दिया गया। उत्तर देने के लिए प्रत्येक विद्यालय के पाँच बालक तथा पाँच बालिकाओं का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया। गुमला प्रखण्ड के चार विद्यालयों के बीस बालक तथा बीस बालिकाओं का चयन किया गया था। इसके अतिरिक्त जानने हेतु 10 शहरी व 10 ग्रामीण अभिभावकों को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया।

प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के अधिक तर विद्यार्थी उच्च स्तर तथा औसत स्तर के जागरूक पाये गये। केवल 2 विद्यार्थी औसत से निम्न स्तर के जागरूक पाये गये। सांख्यिकीय परीक्षणों में यह पाया गया कि गुमला प्रखंड के ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की सामाजिक जागरूकता के स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इस कारण शून्य परिकल्पना स्वीकार की गयी कि बालकों व बालिकाओं की सामाजिक जागरूकता के स्तर में कोई अंतर नहीं है। अभिभावकों में भी विवाह की अभिवृत्ति में शहरी व ग्रामीण में सार्थक अंतर नहीं है। अभिभावकों की

विवाह के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक उच्चस्तर की पायी गयी। शहरी व ग्रामीण अभिभावकों की अभिवृत्ति कोई अंतर नहीं पाया गया।

उपरोक्त विवेचना से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि गुमला प्रखण्ड में बाल-विवाह की समस्या नहीं है क्योंकि विद्यार्थियों व अभिभावकों में उच्च व औसत स्तर की जागरूकता है।

■■

अनुक्रमणिका

क्रं.	अध्याय	पृ.क्र.
1.	गुमला प्रखण्ड में बाल विवाह की समस्या का अध्ययनः परिचय	01
2.	सम्बन्धित साहित्य समीक्षा	15
3.	अनुसंधान प्रविधि	21
4.	गुमला प्रखण्ड की रुपरेखा	32
5.	उत्तरदाताओं की सामाजिक रूपरेखा	34
6.	गुमला प्रखंड में सामाजिक जागरूकता का समष्टि स्तर पर अध्ययन	35
7.	गुमला प्रखण्ड में सामाजिक जागरूकता का विद्यार्थियों पर सूक्ष्म स्तर पर अध्ययन	39
8.	सारांश एवं निष्कर्ष	45
	संदर्भ सूची	48

रंजना सिंह

संकाय सदस्य

शैक्षणिक योग्यता

एम.ए., एम.एड., जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट), गुमला, झारखण्ड।

जेसीईआरटी राँची के निर्देशानुसार,
प्रस्तुत लघु शोध प्रतिवेदन

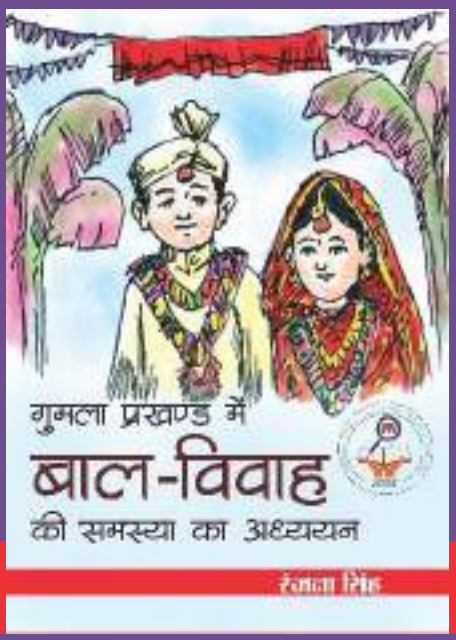

Aditi Publication

Aditi Publication
Opp. New Panchjanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Dist.- Raipur-492001, Chhattisgarh
shodhsamagam1@gmail.com, +91 94252 10308

ISBN : 978-93-92568-41-1